International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746
Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2018; Page No. 74-75

मृणाल पांडे के साहित्य में धार्मिक जीवन–दर्शन

प्रियंका, डॉ. निरुपमा हर्षवर्धन
[1] शोधार्थी, पीएच.डी. (हिन्दी), शोध निर्देशिका, ज्योति विद्यपीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2] मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग, प्रबंधन एवं मानविकी संकाय, ज्योति विद्यपीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

भारतीय समाज में धर्म का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन में धर्म की मुख्य भूमिका है। विद्वानों ने धर्म शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की धृ धातु से मन प्रत्यय लगाने से मानी है। इसका अर्थ है आलम्बन देना, पालन करना। धर्म का नाम धर्म इसलिए है क्योंकि वह सबको इकट्ठा करता है, सबकी रक्षा करता है। धर्म एक ऐसी आधार है जो मनुष्य के कर्म और व्यवहार को जोड़कर नैतिक बनाती है। 'वृहत हिन्दी कोश' में धर्म का अर्थ इस प्रकार बताया गया है– अभ्युदय और विश्रेयस का साधना भूत बड़े विदित कर्म, एक प्रकार का अदृश्य, जिससे स्वर्ग की प्राप्ति होती है। धर्म का संबंध व्यक्ति के विशेष गुणों से है जो उसे समाज के साथ बाँध कर रखते हैं। धर्म जीवन का स्वभाव है ऐसा नहीं हो सकता कि हम कुछ कार्य धर्म को अपनाकर करें व कुछ कार्य धर्म को स्थानान्तरित करके करें। धर्म, ज्ञान और विश्वास उससे अधिक कर्म व आचरण में बसता है।[1]

आज का युग वैज्ञानिक युग है फिर भी समाज में धार्मिक रीति–रिवाज, रूढ़ियाँ प्रचलित हैं जो धर्म की नींव को कमजोर बनाते हैं। मृणाल पांडे जी के साहित्य धार्मिकता से ओत–प्रोत है। पांडे जी ने धर्म का विस्तृत वर्णन किया है कि कैसे आजकल ढोंगी, पाखंडी लोग धर्म के नाम पर लूट मचाते हैं, हमें गुमराह करते हैं। हम आज भी इतने अंधविश्वास में डूबे हुए हैं कि इन कार्यों में अपना सब कुछ नष्ट कर देते हैं।

मृणाल पांडे जी ने अपने साहित्य में धार्मिकता को महत्ता दी है। उन्होंने अपने उपन्यास, नाटक व कहानियों में धार्मिक–जीवन दर्शन को उकेरा है।

1. धर्म और भाग्यवाद

मृणाल पांडे जी ने अपने साहित्य में भाग्यवाद को महत्ता दी है। 'रास्ते पर भटकते हुए' उपन्यास की पंक्तियाँ हैं– "भाग्यहीनों की अटूट भाग्यवादिता की कथाएँ हम सबको चमत्कृत करती है, लेकिन निपट भाग्यहीन लोग अभी भी मानते है कि उनके सारे सुखों–दुःखों के मूल में भाग्य के कुछ अटल लेख हैं। उन्हें न डॉक्टर बदल सकते हैं और न ही पंडित। भाग्य कह लो या नसीब, प्रारब्ध या कर्म। बात एक ही है और पूरी जिन्दगियों की प्रिय और अप्रिय सच्चाइयों को समेटते हुए दूर तक जाती है।[2]

पांडे जी के साहित्य में भाग्यवादिता को श्रेष्ठता दी गई है। 'भाग्यहीनों की भाग्यवादिता'। जहाँ भाग्यहीन सर झुका लेते हैं, वहीं आकर भाग्यवान फिर–फिर भाग्य आजमाते हैं।[3]

'जो राम रचि राखा' में भाग्यवाद का विरोध भी किया गया है कि मनुष्य कर्म से अपना भाग्य बदल सकता है, "में करूंगा तर्क और मैं उठाऊँगा आपके इस अकर्मण्य भाग्यवाद के खिलाफ आवाज देखूंगा। आप मेरा क्या कर लेते हैं। मेरी ही गलती थी जो मैंने आपसे विरोध की अपेक्षा की, एक लचीलेपन की नहीं। शक्ति की बुनियाद पर चोट करने की बजाए मूर्खतावश उसके छोटे–छोटे कंगूरों पर ही वार करता रहा मैं।[4]

2. धर्म का खोखलापन

मृणाल पांडे जी ने अपने साहित्य में धर्म के खोखलेपन का वर्णन किया है। 'मुन्नूया की अजीब कहानी' कहानी में सभी जागरण पूजा पाठ करते हैं– "काली निस्तब्ध ....रात .... आग की लपटें.... डिम डिम डिम ... झन्ना झन .... जाग। जगरिया बाद्यों के बीच युग–युगों पुराना आह्वान तैरने लगा। इस जगरिया आवाज को सुनकर कच्ची उमर के बच्चे। नयी बहुएं सहम जाती हैं और घर की बूढ़ी औरतों से सटने लगते हैं। हम धर्म के पाखंडियों के बहकावे में आकर एक ठीक इंसान को भी पागल बना देते हैं। कई बार तो इन अंधविश्वासों में पड़कर जान तक चली जाती है। हम यही करते हैं जो पण्डे कहते हैं। जो तर्कसंगत नहीं है। 'जो राम रचि राखा' में भी पांडे जी ने धर्म के खोखलेपन का वर्णन किया है। छोटी रानी अपने मायके के एक बाबा का वर्णन करती हुई कहती है– मेरे मायके में एक गरिया बाबा बहुत पहुँचे हुए फकीर थे। वे जिसे गाली दे दें तो मानो उसका जीवन कृतार्थ हो जाए। जिसे कोढी होने का श्राप दें वे चंगा हो जाए, बांझ होने का श्राप दें तो पूतों से आँगन भर जाए, दरिद्र होने का श्राप दें तो, अटूट सम्पत्ति आ जाए। लोग उनके पीछे–पीछे भागते थे बाबा जी एक गाली दे दो।[5]

'एक स्त्री का विदागीत' व 'हमसफर' कहानी में भी पांडे जी द्वारा धर्म के खोखलेपन का वर्णन किया गया है। इस प्रकार धार्मिक अन्धविश्वासों, रूढ़ियों ने धर्म को खोखला कर दिया है। अन्धविश्वासों से धर्म का वास्तविक रूप ही खत्म हो चुका है।

3. धार्मिक कट्टरपन

मृणाल पांडे जी के साहित्य में धार्मिक कट्टरता का वर्णन भी मिलता है। उनके अनुसार अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए कोई भी झुकना नहीं चाहता। अनेकों बार तो धार्मिक कट्टरता के कारण आत्मबलिदान तक भी कर दिया जाता है। सब धर्म के नाम पर मर मिटने के लिए तैयार रहते हैं।

दरम्यान कहानी संग्रह में कट्टता का वर्णन मिलता है। "एक बार तो एक पंछाही नौकर ने जरा मुंह चलाया ही था, तो खींचकर उन्होंने एक कनेटिया झापड़ दिया कि मुँह से खून भर आया था। मर्द के झापड़ बिना दुनिया चल सकती है कभी, ऐसा उनकी बुआ जी कहती थी। सही तो है। बुजुर्गों की बात गलत हो सकती है भला। पर आज कल कौन समझाए। सब अपने मन के हों गए हैं। बुआ जी होती तो? मजाल थी किसी बहू–पतोहू की, जो उनके आगे सिर उठाकर बात भी कर सके। लोगों का कहना था कि दामोदर बाबू खुद एक नामी वकील हो, धर्म के पक्के थे। पर मजाल

है बुआ जी की कोई बात उन्होंने काटी हो।"[6]
दुर्घटना कहानी में भी धार्मिक कट्टरता का वर्णन किया गया है। पांडे जी ने बावा को धर्म के प्रति कट्टर दिखाया है। 'काजर की कोठरी' कहानी में बांदी क्रोधित होती है और पारसनाथ को जान से मारने तक की सोचती है।
इस प्रकार पांडे जी के साहित्य में धार्मिक कट्टरता का भी वर्णन मिलता है।

4. धर्म एवं साम्प्रदायिकता

देश के स्वतंत्र होने के तुरंत बाद हिंदी मुसलमानों के बीच जमकर मारकाट हुई। तब से लेकर आज तक हिन्दू–मुसलमान की बीच दंगे बार–बार हुए हैं। मृणाल जी के साहित्य में साम्प्रदायिकता का वर्णन मिलता है। 'दरम्यान' कहानी में साम्प्रदायिकता का जुट मिलता है, दो चार महीने पहले जब उसने तपाक से कह दिया कि अगर उसे फर्म में नौकरी करनी है तो तनख्वाह यही मिलेगी। अगर उसे नहीं करनी हो तो बता दो, उसकी जगह और कई लोग उस नौकरी को पाकर फूले न समाएंगे। बात तो सही ही थी, रंग जाति का भेद तो प्रकट में हर जगह होगा इन लोगों के अखबार चाहे जो कहे, यहाँ भले ही वह एड़ियाँ रगड़ता थक जाए। बिहारी की इस मामले में राय यह है कि सफेद अमेरिकायों की नौकरी तनख्वाह ये सब अपने लिए लागू करने की सोचना कतई बेवकूफी है।[7] 'काज की कोठरी' कहानी में भी धर्म की आड़ में लोग गलत कार्य करते हैं जो साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देते हैं। ''जो राम रचि राखे में भी सेठ साम्प्रदायिकता की बात करता है, वह कहता है कि हमारे पास रहेगा तो सब कुछ है परन्तु अगर बाहर गया तो तेरा सब कुछ नष्ट हो जाएगा। पंक्तियाँ हैं– ''इससे भी कड़वा उपहास करेंगे तुम्हारे वे लोग, तुम्हारी रस भावुकता का। वे जिन्हें तुम बेजुबान और शोषित दरिद्र नारायण के रूप में भेजते आए हों, इस मंच के बाहर खूंखार पशुओं की तरह ताक में फैले हुए हैं कि यहाँ से, हमारे झुंड से बिछड़ कर कोई बाहर आये तो सही। चीर डालेंगे वे तुम्हें अकेला पाकर। उनकी प्रतिहिंसा और तुम्हारी खाल के बीच में हमारी दौलत ही है जो कवच बन कर खड़ी है। एक बार तुम इससे बाहर निकले नहीं कि टूट पड़ेंगे तुम सब पर। धर की धरी रह जाएंगी तुम्हारी शिक्षाएँ, तुम्हारा मन।[8]
'हमको पिया परदेश' में भी साम्प्रदायिकता की झलक मिलती है। 'चोर निकल के भागा' नाटक में साम्प्रदायिकता विस्तृत रूप में आई है। उसमें धर्म के नाम पर देशों की लड़ाई का आपसी वर्णन है।
'चार दिन की जवानी तेरी' कहानी–संग्रह में अब्दुल्ला कहानी में हिन्दू मुसलमान के दंगे–फसाद का वर्णन किया है। इस प्रकार मृणाल जी के साहित्य में साम्प्रदायिकता का भी वर्णन मिलता है। जब तक हमारे समाज में साम्प्रदायिक दंगे होते रहेंगे तब तक हमारा समाज उन्नति नहीं कर सकता।

5. धर्म और नैतिकता

वर्तमान में 'धर्म' शब्द का प्रयोग अधिकंशतः सम्प्रदाय या पूजा पद्धति के अर्थ में किया जाता है। परन्तु धर्म से अभिप्राय किसी मत, पंथ, सम्प्रदाय के संकुचित रूप से नहीं है, बल्कि धर्म तो आध्यात्मिक अनुभूति है।
मृणाल पांडे जी ने धर्म और नैतिकता के एक–दूसरे से जुड़ा हुआ माना है। धर्म के कार्यों में श्रद्धा भाव रखना भी नैतिकता है। 'दरम्यान' कहानी में ''जब–जब उनके यहाँ था रमेश के घर में सत्यनारायण की कथा होती थी, तो डालियाँ भर फूल देकर उन लोगों को माला बनाने के लिए कहा जाता था। रमेश पट्ठा बड़ी सफाई से हर बार कुल्लड़ भरकर प्रसाद और चरणामृत कोठरी से उड़ा लाता था।[9]
'एक स्त्री का विदागीत' कहानी संग्रह में धार्मिक नैतिकता का वर्णन मिलता है। ''अल्मोड़ा शहर की एक ओर खासियत है उसके मंदिर। सबसे अधिक तादाद शायद देवी मंदिरों की है। शहर के दूसरे प्रिय देवता है भैरव। बटुक भैरव, काल भैरव। मेरे बचपन में हर शनिवार–मंगल, महिला समूह बड़ी सजधज और तैयारी के साथ मंदिरों को प्रयोग करता, धूप–बताशा, हेजलीन, स्नो की शीशियों में तेल और जंगली फूलों की डालियाँ लिये–लिये। नवरात्रों में और भी ज्यादा रौनक रहती है। घर–घर क्लश स्थापना होता, पाठ होता रहता है।[10] 'मुनूचा की अजीब कहानी' की पंक्तियाँ हैं– जगरिया पुरोहित व वादक आँख मूंद फिर झूम रहे हैं। इस कहानी में सर्वस्व कल्याण की कामना की गई है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि मृणाल जी का साहित्य धार्मिक भावना से ओत–प्रोत है। पांडे जी ने अपने साहित्य में धर्म का विस्तृत वर्णन किया है। धार्मिक रीति–रिवाज, अन्धविश्वासों ने धर्म को खोखला बना दिया है। आजकल लोग धर्म के नाम पर लूट मचाते हैं, हमें गुमराह करते हैं और हम इतने अंधविश्वासी बन जाते हैं कि अपना सब कुछ उन्हें सौंप देते हैं। भाग्यवाद का पांडे जी ने विरोध किया है। मनुष्य अपने कर्मों से बड़ा बनता है। हाँ, ये सच है कि कुछ भाग्य का साथ भी होता है। धार्मिक कट्टरपन और साम्प्रदायिकता की धर्म में अहम भूमिका होती है। साम्प्रदायिकता को बढ़ावा असामाजिक लोग देते हैं। जो धर्म के नाम पर एक–दूसरे को भड़काते है। भारत धर्म निरपेक्ष देश है, हमें सभी धर्मों को समान समझना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, पृ. 646
2. मृणाल पाण्डे, रास्तों पर भटकते हुए, पृ. 26
3. वही, पृ. 28
4. वही, जो राम रचित राखा, पृ. 67
5. वही , पृ. 79
6. वही, दरम्यान (कैंसर), पृ. 144
7. वही, पृ. 132
8. वही, जो राम रचि राखा, पृ. 84, 85
9. वही, दरम्यान, पृ. 118
10. एक स्त्री का विदाईगीत, पृ. 13, 14